Helpline no.-(+91)-7597122440

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

मदाऊ, भांकरोटा–मुहाना लिंक रोड़, जयपुर, (राज॰) - 302026

वेबसाईट : www.jrrsanskrituniversity.ac.in ई–मेल - jrrsu@yahoo.com टेलीफैक्स: 0141 - 2850564

अनुसन्धान केन्द्र – एक परिचय

संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न विद्याओं एवं विषयों में उच्चस्तरीय अनुसन्धान तथा दुर्लभ ग्रन्थों के संग्रहण,संरक्षण,सम्पादन और प्रकाशन इस अनुसन्धान केन्द्र के प्रमुख कार्य हैं।

*** अनुसन्धान केन्द्र अपनी अधोलिखित इकाईयों के माध्यम से कार्य कर रहा है: -**

(क) अनुसन्धान बोर्ड

(ख) प्रकाशन एवं भाषान्तरण बोर्ड

(ग) संग्रहालय एवं निक्षेपागार

(घ) प्रौद्योगिकी इकाई -

(1) कम्प्यूटर प्रभाग

(2) दृष्य-श्रव्य प्रभाग

(3) माइक्रोग्राफी प्रभाग

(4) माइक्रोफोर्म प्रभाग

*** अनुसन्धान हेतु पीठों की स्थापना -**

विश्वविद्यालय ने गहन अनुसन्धान और उच्चतम अध्ययन की दृष्टि से वेद, रामानन्द-दर्शन, मीमांसा, जैन-दर्शन, ज्योतिष, आधुनिक-साहित्य, संस्कृत-साहित्य एवं व्याकरण के क्षेत्र में आठ नई पीठों की स्थापना के लिए राज्य सरकार ने वर्ष 2006 में एक स्थाई निधि (कार्पस फण्ड) 2.50 करोड रुपये की राशि प्रदान की, परिणाम अधोलिखित आठ पीठों की स्थापना की गई –

क्रं.सं.	पीठ का नाम
1.	श्रीरामानन्दाचार्यवेदान्तपीठ
2.	सवाई जयसिंह ज्योतिर्विज्ञानपीठ
3.	वेदवाचस्पति मधुसूदन ओझा वेद-विज्ञानपीठ
4.	महामहोपाध्याय गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी व्याकरणपीठ
5.	भट्टमथुरानाथ शास्त्री साहित्यपीठ
6.	पद्मभूषण पट्टाभिराम शास्त्री मीमांसा एवं धर्मपीठ
7.	पं. नित्यानन्द शास्त्री आधुनिक संस्कृतपीठ
8.	महाकविज्ञानसागर जैनदर्शनपीठ

* अनुसन्धान केन्द्र हेतु अनुदानः-

अनुसन्धान केन्द्र को प्रायोगिक विस्तार प्रदान करने के दृष्टिकोण से मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पाँच करोड की राशि स्वीकृत कर राज्य सरकार के माध्यम से प्राप्त हुई, जिससे अधोलिखित कार्य सम्पादित किये जा चुके हैं-

1. पुस्तकालय -

पुस्तकालय की स्थापना करते हुए लगभग 70 लाख रुपये की राशि से-37082 ग्रन्थ /

पुस्तकें क्रय की गई -

स्थापना वर्ष- सितम्बर- 2002

पुस्तकालय भवन क्षेत्र - 11,900 वर्ग फिट

वाचनालय क्षेत्र - 3818 वर्ग फिट

पुस्तक संग्रहण हाल का क्षेत्र- 8082 वर्ग फिट

कुल पुस्तकें वर्ष 2019-2020 तक

क्रंसं.	नाम (Particulars)	कुल संख्या
1.	पुस्तकें (Books)-	42,100
2.	सम-सामयिक पत्र-पत्रिकाऐं (Periodicais)-	89
3.	वार्षिक प्रतिवेदन (Reports)-	162
4.	कम्प्यूटरीकृत पुस्तकों की संख्या	20,875
5.	शोध प्रबन्ध Ph.D. / M. Phil. (Thesis)	283

2. कम्प्यूटर प्रभाग -

विभिन्न उपकरणों एवं 70 कम्प्यूटरों से सुसज्जित कम्प्यूटर प्रभाग की स्थापना की गई।

3. ज्योतिर्विज्ञान प्रयोगशाला –

इस प्रयोगशाला में प्राचीन एवं आधुनिक विधा के 14 इंची ऑटोमेटिक टेलिस्कोप 4.5 इंची टेलिस्कोप, स्काई स्काउट, स्काई मास्टर , विविध ग्लोब, स्केलेटन (शरीर-रचना) रेन-गेज यंत्र, वायुदाब मापक यन्त्र, प्रोजेक्टर, आदि तकनीकी उपकरण एवं विविध अक्षांशीय गोल यन्त्र, विविध मानचित्र एवं खगोलीय चित्र, चित्र संग्रह, आदि

पारम्परिक उपकरण क्रय करते हुए ज्योतिर्विज्ञान के अध्ययन हेतु स्थापित किए गये।

4. शास्त्रीय ज्ञान विज्ञान प्रदर्शनी-

वेद, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, शिक्षा एवं योग इत्यादि शास्त्रों से सम्बद्ध ज्ञान-विज्ञान को प्रकाश में लाने वाले लगभग 500 चित्रों के साथ प्राचीन परम्परा के साथ ही वैदिक पात्र, प्राचीन कृषि यन्त्र, उपकरण इत्यादि संगृहीत कर छात्रों एवं जन सामान्य के लिए उपलब्ध करवाये गये हैं।

5. पाण्डुलिपि संग्रहण

अनुसन्धान केन्द्र में राजवैद्य कृष्णराम भट्ट संग्रहालय, जयपुर, श्रीमार्तण्ड दीक्षित संग्रहालय, हुबली, कर्नाटक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, अलवर व जोधपुर आदि विभिन्न स्थानों से दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संग्रहण कर लगभग 850 पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित की गईं हैं जो अतीव शोधोपयोगी हैं।

6. अनुसन्धान हेतु प्रोजेक्ट-

विभिन्न विद्वानों ने विश्वविद्यालय के अनुसन्धान केन्द्र से प्रोजेक्ट लेकर विविध विषयों पर अनुसन्धान कार्य सम्पादित किये हैं एवं इसके अतिरिक्त अधोलिखित कार्य प्रगति पर हैः-

विभिन्न प्रयोगशालाओं की स्थापना -

(क) वैदिक यज्ञशालाऐं -

1. श्रौतविहार तथा स्मार्त मण्डप
2. वैदिक उपकरण संग्रह
3. औषधियाँ ,वनस्पतियाँ, का संग्रह
4. इष्टियाँ, विभिन्न यज्ञों के संभार,
5. औषधि उद्यान

6. वेद रिकार्डिग व अन्य सम्बद्ध कार्यक्रम /गतिविधियाँ

(ख) रसायन शाला-

(ग) पदार्थ विज्ञान प्रयोगशाला -

1. भौतिक विज्ञानशाला
2. वनस्पतिशाला
3. जीवशास्त्रशाला

(घ) ज्योतिष प्रयोगशालाएं -

1. वेधशाला
2. तारामण्डल
3. रत्नपरीक्षणशाला

(ङ) ज्योतिषीय यंत्र निर्माण (पाषण-यंत्र)

1. सम्राट् यंत्र, राशि-वलय यंत्र, क्रांति -यंत्र,दिगंश यंत्र , चक्र-यंत्र षष्ठांश, यंत्र,कपाली -यंत्र, ज्योतिष - यंत्र निर्माण
2. ध्रुव-दर्शक यंत्र, कान्तिवृत्त यंत्र ,उन्नतांश यंत्र, याम्योत्तर् वृत्त यंत्र राशि यंत्र, धूपघटिका यंत्र
3. उक्त यंत्रों के मांडल यंत्र (पीतल, ताम्बा एवं लकडी आदि से निर्माण)

(च) सौर वेधशाला -

(छ) योग शाला - ध्यान एवं आसन कक्ष, समाधि कक्ष

(ज) तन्त्र शाला - दश महाविद्यापीठ स्थापना प्रयोग, संभार संग्रह तथा मुद्राएँ

(झ) सभागार एवं मुक्ताकाशी रंगमंच

* अनुसन्धान केन्द्र द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ -

क्रं.सं.	ग्रन्थ नाम	भाषा	लेखक/ सम्पादक	प्रकाशन वर्ष	मूल्य
1.	व्याख्यानमणिमाला	हिन्दी संस्कृत	प्रो. ताराशंकर शर्मा	2005	100
2.	मञ्जुनाथवाग्वैजयन्ती	संस्कृत हिन्दी	देवर्षि कलानाथ शास्त्री	2007	255
3.	Integral World – View of the Vedas	अंग्रेजी	प्रो. दयानन्द भार्गव	2007	395
4.	ज्योत्पत्ति	हिन्दी अंग्रेजी	सं.वेणुगोपाल जी, हेरूर एवं, डा.जे.एन.विजय	2007	195
5.	सांख्यकारिका (अशोकदा – संस्कृतव्याख्या सहित)	हिन्दी संस्कृत	डा. प्रमोद कुमार शर्मा	2007	295
6.	काव्यदर्शनविमर्शः	हिन्दी	आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी	2008	320
7.	वैदिकसंहितासु ज्योतिर्विज्ञानम्	संस्कृत	डा. विनोद कुमार शर्मा	2008	301
8.	अश्वशास्त्रम्- एन इलस्ट्रेटेड बुक ऑफ इक्विनोलोजी	संस्कृत अंग्रेजी हिन्दी	डा. सन्दीप जोशी	2008	2100

9.	चिकित्साज्यौतिषम्	हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी	डा. विनोद कुमार शर्मा	2008	475
10.	भारतीय सभ्यता का एक सांस्कृतिक फलक	हिन्दी	ले. वासुदेव पोद्दार, सं. पं.अनन्त शर्मा	2008	235
11.	प्रौढचिन्तनचन्द्रिका	संस्कृत	डा. सुभाष शर्मा	2009	195
12.	पुराण दर्शन समग्र दृष्टि	हिन्दी	ले. पं.अनन्त शर्मा, सं. प्रो.ताराशंकर शर्मा	2010	275
13.	भक्तिरसस्यैव ब्रह्मस्वरूपत्वम्	संस्कृत	डा. सुभाष शर्मा	2010	370
14.	पातञ्जलयोगसूत्रम्	हिन्दी	प्रो. दयानन्द भार्गव	2010	395
15	अहमेव राधा अहमेव कृष्णः	संस्कृत हिन्दी	अ.प्रो.ताराशंकर शर्मा	2013	200
16	रामानन्ददर्शनदीपक	संस्कृत	पं.बदरि प्रसाद शर्मा, प्रपूर्णा	2014	250
17	वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलियाँ	हिन्दी	प्रो. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र एवं डॉ. विनोद कुमार शर्मा	2014	150

* शोध संस्थानों को मान्यता-

प्रदेश की ऐसी संस्थाओं को, जो विश्वविद्यालय के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये शोध एवं अनुसन्धान कार्य में संलग्न हैं, मान्यता दिये जाने का प्रावधान परिनियम 25 (क) द्वारा किया गया है। इस प्रावधान के अन्तर्गत प्रदेश के शोध संस्थानों को मान्यता दी जाती है। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय से अधोलिखित चार संस्थान मान्यता प्राप्त है-

1. पण्डित मधुसूदन ओझा वैदिक अध्ययन एवं शोधपीठ संस्थान, राजस्थान पत्रिका, जयपुर (राज.)

पण्डित मधुसूदन ओझा वैदिक अध्ययन एवं अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना 08-जून-2004 को राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक श्री गुलाब कोठारी जी ने अपने पिता श्री कपूरचन्द कुलिश जी द्वारा प्रारम्भ किये गये वैदिक अध्ययन एवं शोध को आगे बढाने एवं वेदों में निहित भारतीय वैदिक ज्ञान-विज्ञान एवं सांस्कृतिक विरासत को देश-विदेश में प्रचारित करने के लिए की। इस संस्थान के चेयरपर्सन (अध्यक्ष)

श्री गुलाब कोठारी जी हैं। इस संस्था द्वारा वेदों एवं पं. मधुसूदन ओझा के साहित्य पर हिन्दी व अंग्रेजी में पुस्तकें प्रकाशित करने के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार व कान्फ्रेंस इत्यादि का आयोजन किया जाता है।

2. भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान जयपुर (राज.)

भारतीय प्राच्यविद्या ज्योतिष शोध संस्थान, गोम डिफेन्स कालोनी वाल्मिकी मार्ग वैशाली नगर, जयपुर है तथा इसका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण राजस्थान है। संस्थान का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत एवं ज्योतिष के एक समृद्ध पुस्तकालय की स्थापना करना, विभिन्न सामयिक विषयों पर संगोष्ठियों एवं ज्योतिष सम्मेलनों का आयोजन करना प्रचार एवं प्रसार हेतु विद्यालय की स्थापना करना, समाचार पत्र, पत्रिकाऐं, शोध पत्र आदि का प्रकाशन करवाना, देश-विदेश की कुण्डलियों का तुलनात्मक विश्लेषणात्मक अध्ययन कर ज्योतिष को वैज्ञानिक आधार प्रदान करना इत्यादि हैं।

3. श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर

इस संस्थान का बृहद् उद्देश्य संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश भाषा में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश व अन्य प्रदेशों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध अप्रकाशित पाण्डुलिपियों में से चयनित प्राचीन पांडुलिपयों पर अध्ययन एवं अनुसन्धान कर उन्हें प्रकाश में लाना है। इस प्रकार के अध्ययन, व अनुसन्धान से भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के उन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों, विचारों एवं सामाजिक, दार्शनिक मान्यताओं को उजागर करने में सहायता मिलेगी, जो अब तक प्रकाश में नहीं आये हैं साथ ही इन पाण्डुलिपियों में उपलब्ध सामग्री को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी सम्पादित किया जा सकेगा।

4. श्रीमती मोहरी देवी तापडिया संस्कृत महाविद्यालय समिति जसवंत गढ (नागौर)

श्रीमती मोहरी देवी तापडिया संस्कृत महाविद्यालय समिति नामक शोध-संस्था जसवंतगढ (नागौर) में कार्यरत है। संस्था के प्रमुख उद्देश्य- भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार करना, संस्कृत शिक्षा का प्रचार प्रसार करना, संस्कृत विद्यालय द्वारा इच्छुक निर्धन छात्रों को निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था कराना, निर्धन छात्रों को निःशुल्क भोजन, आवास व्यवस्था देकर शिक्षा देना इत्यादि हैं।

*** पत्रिका प्रकाशन –**

1. वयम्

संस्कृत वाङ्मय में निहित गूढ तत्त्वों तथा नवसर्जनात्मक रचनाओं को प्रकाश में लाने के दृष्टिकोण से इस विश्वविद्यालय ने एक वार्षिक संस्कृत पत्रिका प्रकाशित करने के उद्देश्य वर्ष- 2004 में इसका प्रथम अंक 'अक्षरा' के नाम से प्रकाशित किया गया, जिसका लोकार्पण वसन्त पंचमी, 13 फरवरी-2005 को किया गया। संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में यही पत्रिका सितम्बर 2006 से षाण्मासिक के रुप में

निरन्तर प्रकाशित 'वयम्' की जा रही है।

2. प्रवृत्ति-

विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों गतिविधियों एवं विकास से सम्बद्ध कार्यों को उल्लिखित करने के उद्देश्य से जुलाई 2007 से 'प्रवृत्ति' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन निरन्तर किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के प्रकाश्यमान ग्रन्थः-

वर्तमान में निम्नानुसार ग्रन्थों पर कार्य पूर्ण होकर मुद्रण कार्य हेतु प्रकाशनार्थ मुद्रणालय को भिजवाये गऐ-

1. अम्भोवाद, सानुवाद सटिप्पण- पण्डित अनन्तराम शर्मा
2. अत्रिख्याति - पण्डित बदरिप्रसाद शास्त्री
3. शाब्द सुधा - पण्डित बदरि प्रसाद शास्त्री
4. निर्विशेष ब्रह्मवाद - पण्डित पारसनाथ द्विवेदी
5. भगवन्नामकौमुदी - आचार्य श्रीसियारामदासजी
6. श्रीरामतापनीयोपनिषद् - आचार्य श्रीसियारामदासजी
7. यागानुष्ठानपद्धति - प्रो. युगल किशोर मिश्र
8. संस्कृत साहित्य आधुनिक कालीन परिदृष्य - देवर्षि कलानाथ शास्त्री
9. दर्शपौर्णमासेष्टि - प्रो. दयानन्द भार्गव

विश्वविद्यालय द्वारा पाण्डुलिपीय संरक्षणः-

देश के विभिन्न संस्थानों एवं विद्वानों से लगभग 2000 पाण्डुलिपियों का संग्रहण कर उन्हें संरक्षित किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय पत्रिकाऐं -

1. वयम् (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी) षाण्मासिक शोध पत्रिका का 28 वें अंक का प्रकाशन प्रकाशनाधीन है।

2. प्रवृत्तिः (वार्तापत्र) का प्रकाशन प्रक्रियाधीन है।

(डॉ. माताप्रसाद शर्मा)
निदेशक, अनुसन्धान केन्द्र